RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 24 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 17 नवम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

रजत जयन्ती का जोश और सवालों की झड़ी

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना की रजत जयन्ती का जोश और सवालों की झड़ी बनी हुई है। सरकार की ओर जहाँ अपनी उपलब्धि गिनाते हुए गाल बजाए जा रहे हैं वहीं विपक्ष लगातार सवाल उठा रहा है। राज्य स्थापना दिवस से पहले ही रंगारंग कार्यक्रमों की झड़ी चारों ओर दिखाई देने लगी थी जो अभी तक जारी है। आयोजनों के जोर में बच्चों और युवाओं को आगे लाने के लिये गीत-संगीत का सहारा लिया गया और जगह-जगह प्रतियोगिताएं हुई। मैराथन पोस्टर, निबन्ध, रंगोली, क्विज, नाटक, एकल गायन-वादन, समूह नृत्य तमाम आयोजनों के मंच सजे और स्कूल कालेजों से लेकर अन्य स्थानों पर इनका संचालन हुआ। जिला स्तर पर गोष्ठियों का आयोजन और शिविरों का संचालन किया गया। सरकारी आयोजनों के साथ ही संस्थाओं ने अपने स्तर पर कार्यक्रम किये। दूसरी ओर सवालों की झड़ी लगाने वाली सभाओं और गोष्ठियों की कमी नहीं थी। कांग्रेस, उत्तराखण्ड क्रान्तिदल, परिवर्तन पार्टी सहित अन्य दल, संगठनों ने अपनी पर्वतीय प्रदेश के 25 सालों पर सम्वाद किया और राज्य की बेहतरी के लिये एक लड़ाई और लड़ने की बात कही। शहीदों को श्रद्धांजलि देने के साथ ही आन्दोलन कारियों को सम्मानित करने के आयोजन भी हुए।

राज्य स्थापना के मौके पर प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी का आगमन भी पहले से तय था। प्रधानमंत्री ने 8140 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया। गढ़वाली बोली से सम्बोधन की शुरूआत करते हुए मोदी ने कहा कि मेरा उत्तराखण्ड से गहरा लगाव है। जब मैं यहाँ आता हूँ तो लोगों की लगन, ललक मुझे प्रेरित करती है।

भारत के मीलपत्थर

महाभारत : हमारी एक अद्वितीय निधि

सूर्यकान्त बाली

महाभारत के बारे में एक अजीब सी अफवाह सारे देश में फैली हुई है और यह अफवाह कोई आज नहीं फैली, बहुत पुरानी है। शायद सदियों से फैली है। क्या है यह अफवाह? यह कि अगर कोई व्यक्ति सम्पूर्ण महाभारत पढ़ लेगा तो उसके चित्त में और उसके परिवार में कुछ न कुछ अशुभ जरूर होगा। इस अफवाह के डर के मारे हुआ यह कि प्रायः लोग महाभारत का कभी अपने घर में वैसा धार्मिक पाठ या अनुष्ठान नहीं करवाते जैसा अन्य प्राचीन ग्रन्थों का करवाया जाता है। अठारह पर्वों वाली महाभारत के अन्त में एक बहुत लम्बा परिशिष्ट जुड़ा हुआ है, करीब हरिवंश पुराण। इसका नाम तो पुराण है, पर अठारह महापुराणों में इसकी गिनती नहीं होती। परिशिष्ट तो यह बेशक महाभारत का है, पर शेष महाभारत से अलग इसको स्वतंत्र धार्मिक मान्यता मिली है और जीवन के कुछ विशेष कष्टों, खासकर निस्सन्तान होने के कष्ट को दूर करने के लिए हरिवंश पुराण के पाठ और अनुष्ठान का विधान कर दिया गया है और लोग इस पर आचरण भी करते हैं।

सवाल है, महाभारत के बारे में ऐसी अफवाहें क्यों फैली हैं? क्यों नहीं इसके धार्मिक अनुष्ठान और पाठ का वैसा ही विधान कर दिया गया जैसा उसी के अंगभूत अंश श्रीमद्भागवदगीता का और इसके परिशिष्ट हरिवंश पुराण का किया गया है? विडम्बना यह है कि महाभारत को धर्मशास्त्र माना गया है और इसे पाँचवे वेद के श्रेष्ठतम सिंहासन पर बिठाया गया है। पर इसके बावजूद इसे पूरा पढ़ने के बारे में अजीबो-गरीब डर पैदा कर दिया गया है। चूँकि इसका कोई विशेष कारण नजर नहीं आता, इसलिए एक ही बात समझ में आती है। महाभारत बेशक हमारा राष्ट्रीय महाकाव्य है, हमारा धर्मशास्त्र है, फिर भी सच यह है कि इसकी कथा पढ़कर वैसा सुख नहीं मिलता, वैसी शान्ति नहीं मिलती, वैसा आराम नहीं मिलता, जैसा रामायण पढ़ने के बाद मिलता है। महाभारत में भयानक युद्ध है। भीष्म, द्रोण, कर्ण और शल्य पर्वों सिर्फ युद्ध है, मारकाट है, त्राहि-त्राहि है। पर युद्ध तो रामायण में भी है। पूरा लंकाकाण्ड युद्धमय है तो इसमें पहले के काण्डों में भी खासकर अरण्य और सुन्दर काण्डों में युद्ध, संघर्ष और विनाश की कथाएँ लिखी पड़ी हैं। पर एक फर्क फिर भी है और सभी भारतवासी इस फर्क को जानते हैं। रामायण के युद्ध प्रसंगों को पढ़कर एक तसल्ली मिलती है कि दो पक्ष हैं- एक न्याय का पक्ष और दूसरा अन्याय का। दोनों में संघर्ष हुआ और इस संघर्ष में न्याय के पक्ष की विजय हुई। इसलिए एक श्रेष्ठतम काव्य के रूप में वाल्मीकि रामायण पढ़ने के बाद पाठक को स्पष्ट सन्देश मिल जाता है कि राम जैसा बनना है, रावण जैसा नहीं। पर महाभारत के संघर्ष को पढ़ने के बाद क्या वैसा सन्देश मिल पाता है? कौरव हारे और पाण्डव जीते। पर क्या इसके बावजूद पाठक को सन्देश मिल पाता है कि धृतराष्ट्र जैसा नहीं पाण्डु जैसा बनना है, दुर्योधन जैसा नहीं भीम जैसा बनना है, दुश्शासन जैसा नहीं अर्जुन जैसा बना है? पूरे महाभारत के अनुकरणीय पात्र कोई कम नहीं हैं। चार-पाँच तो हैं ही- भीष्म, कृष्ण, युधिष्ठिर, द्रौपदी और विदुर। पर इन सभी के साथ दो दिक्कतें हैं। एक तो ये सभी बड़े ही कठिन हैं। इतना उलझे हुए हैं कि उन्हें कैसे अनुकरण करें, पाठक को वैसा स्पष्ट नहीं होता जैसा राम, भरत, सीता या हनुमान को अनुकरण करने में पाठक को कोई खास दिक्कत नहीं आती। और फिर से पात्र युद्ध में से निखर कर नहीं आए जिससे कि इनका विजयी चरित्र अनुकरणीय बन जाता। कृष्ण का जीवन और जीवन दर्शन इतना विराट और अद्भुत है कि वे तो ईश्वर एवं पूर्णावतार हो गए। पर शेष पात्रों को क्या अपने जीवन में उतारा जाए, यह पाठक को इदमित्थं समझ में नहीं आ पाता, बेशक इन सभी पात्रों का चरित्र, वृत्तान्त और घटनाचक्र हमारे मन के तनाव को कम नहीं करता, बढ़ाता जरूर है, कोई भी पात्र (कृष्ण और युधिष्ठिर के अपवादों को छोड़कर) आदर्श और मर्यादा का कोई स्पष्ट मानदण्ड कायम नहीं कर पात, पूरा महाभारत युद्ध, न्याय और धर्म का सीधा सन्देश नहीं देपात, बल्कि उलझनें ज्यादा पैदा करता है, इसलिए षड्यन्त्रों, कुटिलताओं, पापाचारों, धोखा धड़ियों और मारकाट से भरा महाभारत क्यों पढ़ा जाए? शायद इसीलिए यह अफवाह फैली ताकि पाठक को इस महाग्रन्थ को लगातार पढ़ने से पैदा होने वाले तनाव से मुक्त रखने की व्यवस्था कर दी जाए। पर चूँकि महाभारत इतना ज्यादा महत्वपूर्ण है कि इसे पढ़े बिना कोई भारतीय रह नहीं सकता, इसलिए इसे थोड़ा 'गैप' देकर, आगे-पीछे करके पढ़ने की बात कही गई। कहते हैं महाभारत पूरा लिख देने के बाद वेदव्यास इतने उदास हो गए कि वे कृष्ण के पास उपाय पूछने गए कि जिन्होंने उन्हें कहा कि कृष्ण के लीलाचरित्र का वर्णन करो तो तुम्हारी उदासी दूर हो जाएगी। इस पर वेदव्यास ने भागवत महापुराण लिखा

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

रजत जयन्ती का अवसर

उत्तराखण्ड अपनी रजत जयन्ती के दौर पर है। राज्य स्थापना के पच्चीस साल का अवसर केवल नृत्य-रंग कर निपटा देना मात्र नहीं बल्कि यह याद दिलाता है कि कितने संघर्षों के साथ इस राज्य की स्थापना हुई है। आन्दोलन की तपिश से उपजा यह राज्य अपने मूल उद्देश्यों को पाने में कितना सफल रहा है, यह भी जानने का अवसर है। जैसा कि कहा जाता रहा है कि नेताओं व विधायकों ने पहाड़ को केवल चुनाव जीतने का माध्यम बना दिया है, इस सवाल को भी समझना होगा। अनसुलझे सवालों का समाधान खोजा जाना चाहिये।

साफ दिखाई दे रहा है कि उत्तराखण्ड को देवभूमि के रूप में जितनी मान्यता मिली है, उससे कहीं ज्यादा आफत इसे मस्ती का अड्डा बनाने वालों ने मचा रखी है। पहाड़ की सड़कों पर जाम लगना इस बात को बता रहा है कि दुनियाभर से भीड़ का आना शुरू हो चुका है जबकि पलायन का सच बहुत साफ है। खाली हो चुके गाँव और बंजर खेतों के अलावा पूरे प्रदेश में महोत्सव का ताण्डव चल रहा है। अभिनेताओं की रोटी ऐसे आयोजन हो सकते हैं लेकिन नेताओं को जुटी भीड़ चटनी रूप में दिखाई देती है। ऐसा गठजोड़ प्रदेश में सिर्फ जलसों पर जोर देता है। जबकि इस पर्वतीय प्रदेश की हालतों पर तरस खाते हुए संवारना जरूरी है। शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, संचार सहित मूलभूत बातों के लिये सरकार व असरदार लोगों को जोर लगाना चाहिये। प्रदेश की रजत जयन्ती तभी सार्थक होगी जब उत्सवधर्मिता के इस प्रदेश में ठोस कार्यों की सिद्धि होने लगे।

प्रदेश में नेतागर्दी को उद्योग के रूप में बढ़ावा देने वालों से सावधान रहना होगा। इसके अलावा दलाली करके गुमराह करने वालों को भी समझना जरूरी है। संघर्ष से आगे बढ़ने वालों का उत्साह उनकी सच्चाई में दिखाई देता है। यदि उन्हें बार-बार छेड़ा जाएगा तो यह पर्वतीय प्रदेश में अशान्ति के बादल घने होंगे। ऐसी स्थिति आने ही न जाए कि जिससे वातावरण दूषित हो। सामाजिक सौहार्द के संकल्प के साथ इस रजत जयन्ती का अवसर शुभ किया जाना चाहिए।

फसक

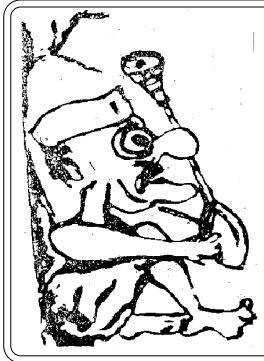

दाज्यू, चुनाव से पहले की ढोल-फोक हो रही ठैरी

अब तो धिरक कर ही थिरकाने का रिवाज चल पड़ा है बल

दाज्यू, प्रदेश में दबादब कार्यक्रम हो रहे हैं। दौरे, बैठक, गोष्ठी, पदयात्रा के अलावा सोशल मीडिया तो उल्टी-दस्त से भर चुका है। गब्बू कह रहा है- 'संगठन में पद मिल जाए तो धुंआधार खेल कर दूंगा।' दाज्यू, चुनाव से पहले की ढोल-फोक हो रही ठैरी। आप जानने ही वाले हुए जब भकार भरा हो तो फोकने में दिक्कत नहीं होती है। वैसे भी अब तो धिरक कर ही थिरकाने का रिवाज चल पड़ा है। जिले वाला अधिकारी तो गजब ही करता जा रहा है। उन्हें पता है कि राज की नीति क्या है और नेताओं को क्या पसन्द है। दाज्यू, गाँव हो या जिला मैनेजमेंट का तमीज होना चाहिये। गफलत मियाँ और सूरी देव तो फेसबुक में ही इधर की उधर करके अपनी जमीन तैयार कर रहे हैं। उन्हें पता है कि तारीफ-पे-तारीफ करते रहो कभी तो रेत फिसलेगी ही।

दाज्यू, बागेश्वर 9 किलो सात सौ ग्राम चरस के साथ एक तस्कर गिरफ्तार होने की सूचना पुलिस ने जोरशोर से दी। जिले में अब तक की दूसरी बड़ी खेप की खबर ठैरी तो इसका जोर होना ही था। मार लट्ठफोड़ रिजल्ट भी तो दिखाना है सरकार बहादुर को। जंगली सुअर खेतों में हमला कर रहे हैं क्या किया जाए? गडेरी के उत्पादन में कमी आ गई है। मौसमी सब्जी के रूप में गडेरी की इन दिनों मांग होती थी लेकिर काश्तकारों को उचित दाम ही नहीं मिल पा रहा है। चारों ओर सुअरयोव हो रही ठैरी। दाज्यू, अल्मोड़ा में एक व्यक्ति ने 19 लाख रुपये के चक्कर में कागजों में पत्नी बना ली। राज्य सहकारी बैंक स कर्ज ले लिया था। मामला पकड़ में आने के बाद छानबीन हो रही है बल।

दाज्यू, बागेश्वर के कपकोट में पुलिस ने शराब के नशे में वाहन चलाने वाले चालक को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने ठीक ही किया लेकिन क्या कहें नशे की हालत में क्या नहीं चल रहा है? पकड़-धकड़ की दुनियादारी में गुलरसूल और रसूलगुल भी पकड़े जाते। समाज में समरसता की बात बहुत हो रही है पर रिसाव इतना ज्यादा होने लगा है कि पता नहीं कब तूफान उठ जाए।

गजब तो तब हो गया था जब देश के प्रधानमंत्री के आने से पहले एक पत्र वायरल हुआ जिसमें विश्वविद्यालय की ओर से कालेजों को विद्यार्थियों को लाने की सूचना का नोटिस था। दाज्यू, वायरल मामले को विश्वविद्यालय ने पूरी तरह फर्जी बताया। देवभूमि विवि ने कहा यह भ्रामक नोटिस है। भगवान जाने कैसा कैसा होने लगा है। बहुत ही गजबजाट होने लगी है अब तो। आने वाला समय बहुत कष्टकारी बनता जा रहा है।

दाज्यू, चुनाव से पहले की ढोल-फोक को समझना भी हर किसी के बस की बात नहीं है। कौन कर्ता है कौन किसका धर्ता है, यह कहना भी कठिन ही ठैरा। जिधर तो हवा चली उधर का रुख करने वाले खूब धिरक रहे हैं। थिरकन बनी रहे इसके लिये धिरकना भी तो रिवाज हो गया है। जैसे अधिकांश सब्जी का साथ आलू देता है वैसे ही ज्यादातर नेताओं का साथ.....।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

मुनस्यारी में डाक व्यवस्था चरमराई

पोस्टमास्टर को शिकायत दर्ज कराई है

मुनस्यारी। क्षेत्र के कुछ इलाकों में डाक व्यवस्था बुरी तरह चरमराई है, जिसकी शिकायत पोस्टमास्टर को दर्ज कराई जा चुकी है। बताया जा रहा है कि बाजार क्षेत्र में पिछले कुछ समय से डाक व्यवस्था गड्बड़ हो रही है। चूंकि डाक वितरण के लिये नई तैनाती हुई जिसके बाद यह लापरवाही देखने को मिली। आखिर डाक जैसे अति आवश्यक कार्य में लापरवाही कहाँ हो रही है इसको लेकर पिघलता हिमालय प्रतिनिधि ने भी पोस्टमास्टर से दूरभाष पर बात की तो उन्होंने इसपर सुधार करवाने का आश्वासन दिया। इससे समझा जा सकता है कि डाक जैसे पवित्र कार्य में लापरवाही का मतलब गम्भीर मामला है। स्थानीय बुद्धिजीवियों ने मामले का संज्ञान लेते हुए कहा है कि यदि अब भी सुधार नहीं हुआ तो प्रवर अधीक्षक डाक को शिकायत सहित शासन को लिखा जाएगा।

गंगोलीहाट में गड्ढा मुक्त सड़कों की मांग को लेकर कांग्रेस ने भेजा ज्ञापन

गंगोलीहाट। विधानसभा गंगोलीहाट में गड्ढा मुक्त सड्कों की मांग को लेकर कांग्रेस ने जिलाधिकारी को ज्ञापन भेजा है। कांग्रेस अनु.जाति प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज टम्टा के नेतृत्व में शिष्ट मण्डल ने तहसीलदार के माध्यम से ज्ञापन भेजते हुए 28 सड्कों को गड्ढा मुक्त करने की मांग की। ज्ञापन देते हुए श्री टम्टा ने कहा कि इस विधानसभा में अधिकांश सड्कें खस्ताहाल हैं जिसमें वाहन चलाना जोखिम का काम है। इन मार्गों में पव्वाधार मोटरमार्ग, सलाण, बाजारगढ़ा से चौरपाल, धराडी से अनर गांव, मणकनाली से जाखनी, भामा चौनाला से डम्डे बुरसुम, टिमटा से असकाडा स बढेंना, बुगली, दसाईथल से अग्रोन चौड़ा, भिनगढ़ी से पोखरी, बासीखेत, कुनलता से भिनगढ़ी, बनकोट धारी धूमाकोट, बनकोट से बटगरी, दसौली से लछिमा औखरानी, देवीनगर से दुनखोला, चौड़मन्या से भूल की अध्याली, चामाचौड़ मोटरमार्ग, बेरीनाग से रीठा रैतोली, जगथल से गराऊ, रायागर से चौड़मन्या से आम हाट मोटरमार्ग सहित पातालभुवनेश्वर से दौलावलिया मोटर मार्ग जो कि पीएमजीआईवाई विभाग व लोनिवि बेरीनाग के अन्दर अलग अलग सड्कें आती हैं।

ज्ञापन सौंपते हुए शिष्टमण्डल ने कहा कि यदि दो सप्ताह के भीतर उक्त 28 सड्कों को गड्ढा मुक्त नहीं किया जाता है तो क्षेत्रीय जनता को साथ लेकर कांग्रेस पार्टी जिला मुख्यालय में धरना प्रदर्शन करेगी। ज्ञापन देने वालों में प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज टम्टा, विक्की गंगोला, हयात सिंह बोरा, सुन्दर राम, दरबान राम, नरेन्द्र सिंह भिलोला, गणेश रावल, सुरेन्द्र बिष्ट, वीरेन्द्र सुगड़ा शामिल थे।

मल्ला जोहार विकास समिति का वार्षिक अधिवेशन

जरूरतमंदों को मौके पर जाकर ही सामग्री वितरित हो

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति का वार्षिक अधिवेशन मल्ला दुम्मर में हरि प्रदर्शनी के दौरान हुआ। जिसमें माइग्रेशन के दौरान होने वाली दिक्कतों के अलावा जोहार घाटी की परेशानियों पर चर्चा हुई। उपस्थिति विभागीय अधिकारियों से कहा गया कि योजनाओं का लाभ देने के लिये ईमानदारी जरूरी है। जरूरमंदों को मौके पर जाकर उनको दी जाने वाली सामग्री दी जानी चाहिये। बताया जाता है कि कई बार वितरित होने वाली वस्तुओं को उन स्थानों तक पहुँचने ही नहीं दिया जाता है जहाँ उन्हें जाना था।

बैठक से पूर्व समिति का शिष्टमण्डल ने बीआरओ बीसीसी दरकोट के सीओ से भेंट कर मिलम मोटर रोड की प्रगति के बारे में जानकारी ली। वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता पूर्व मुख्य वन संरक्षक केरल सरकार गंगा सिंह जंगपांगी ने करते हुए सभी से अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिये सहयोगात्मक रुख के साथ जागरुक रहने को कहा। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने सभी का स्वागत करते हुए पिछली बैठक व कार्यों के बारे में बताया। लोकबहादुर सिंह जंगपांगी के संचालन में हुए कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि कुन्दन सिंह पांगती, गोकर्ण सिंह मर्तोलिया, शंकर सिंह धर्मशक्तू, चन्द्र सिंह बृजवाल ने मल्ला जोहार की स्थितियों पर चर्चा करने के साथ ही अपने अनुभवों से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि किशन सिंह जंगपांगी व बेलमती मपवाल ने यात्रा मार्गों के सुधारीकरण की बात रखी।

मल्ला जोहार विकास समिति की खुली बैठक में माइग्रेशन पर जोहार से आए परिवारों ने अपनी समस्याओं से अवगत कराया। समिति ने भी अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए राशन व्यवस्था की प्रशंसा की। चन्द्र सिंह बृजवाल पूर्व बैंक अधिकारी ने अपने महत्वपूर्ण सुझावों में यह भी कहा कि दूरस्थ क्षेत्रों को भेजे जाने वाली खाद्य सामग्री की गुणवत्ता जाँच गम्भीरता से की जाए। बैठक में संचार व्यवस्था पर चर्चा में कहा गया कि माइग्रेशन गाँव में बिना बिलम्ब के सुविधा की जाए क्योंकि सेटेलाईन फोन माध्यम से बात नहीं हो पाती। सिंचाई विभाग के अधिकारियों को सिंचाई व्यवस्था दुरुस्त करने की मांग की गई। बताया कि सिंचाई के बिना काश्तकारों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार पशुचिकित्सा के बारे में भेड़ बकरियों एवं अन्य जानवरों को उच्च हिमालयी क्षेत्र में चुगान हेतु जाते समय उपचार की व्यवस्था व कैम्प लगाने को कहा गया। विभाग के प्रतिनिधि द्वारा उनके द्वारा किये गये कार्य की जानकारी भी दी गई। बैठक में स्वास्थ्य विभाग से कहा गया कि बुर्फू में प्रतिवर्ष माइग्रेशन उतक्रमण काल में एएनएम की नियुक्ति की जाए और सभी प्रकार की औषधियां प्रत्येक गाँव में वितरित की जाएं। प्रत्येक वर्ष माह जून व सितम्बर अक्टूबर में मेडिकल कैम्प की व्यवस्था हो। सीएपी प्रोग्राम पर चर्चा में कहा गया कि आर्मी आईटीबीपी द्वारा माइग्रेशन गाँवों में ही मेडिकल कैम्प, पशुचिकित्सा कैम्प एवं सामग्रियों का वितरण भी माइग्रेशन अवधि के दौरान किया जाए न कि मुनस्यारी में।

वन विभाग से हरियाली एवं वृक्षारोपण कार्यों पर चर्चा करते हुए कहा गया कि जंगली जानवरों के नुकसान की भरपाई की ठोस व्यवस्था हो। ब्राइवेन्ट ग्रामों में वन विभाग द्वारा सामग्रियों का वितरण व विभागीय अधिकारियों का समय-समय पर भ्रमण होना चाहिये। नन्दादेवी वाइसवियर योजना के अन्तर्गत जड़ी बूटी खेती उपलब्ध कराई जाए। खण्ड विकास की ओर से माइग्रेशन गाँव में प्रधानमंत्री ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत घर बनाने की योजना, गौशाला आदि की जानकारी दी गई। सभा के अन्त में सभी से अनुरोध किया गया कि अपनी बातों को खुले मंच में कहने के लिये बिना हिचक सभी तैयार रहें और विभाग अपनी योजनाओं का लाभ असल लोगों तक पहुँचाएं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड

राज्य गठन के बाद खाद्यान्न उत्पादन

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड में राज्य गठन के बाद खाद्यान्न उत्पादन तो बढ़ा है लेकिन खेती का रकबा साल दर साल घटा है। कृषि क्षेत्रफल दो लाख हेक्टेयर कम होने के बाद भी उत्पादन में एक लाख मीट्रिक टन की बढ़ोतरी हुई है। शहरीकरण के चलते देश दुनिया में प्रसिद्ध देहरादून बासमती की खुशबू गायब हो गई। वहीं, मोटे अनाज, जैविक व सगंध फसलों की खेती से उत्तराखण्ड को फिर से वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है।

राज्य गठन के समय उत्तराखण्ड में कृषि का कुल क्षेत्रफल 7.70 लाख हेक्टेयर था। जो 25 साल में घटकर 5.68 लाख हेक्टेयर पर पहुँच गई है। शहरीकरण, अवस्थापना विकास, पलायन, जंगली जानवरों की समस्या भी कृषि क्षेत्र में कमी का मुख्य कारण रहा है। जिससे परती भूमि का क्षेत्रफल (ऐसी भूमि जिस पर पहले खेती होती थी) भी 1.07 हेक्टेयर से बढ़कर तीन लाख हेक्टेयर तक पहुँच गई है। 2000-01 में राज्य में खाद्यान्न उत्पादन 16.47 लाख मीट्रिक टन था। जो बढ़कर 17.52 लाख मीट्रिक टन पहुँचा है। राज्य बनने से पहले देहरादून व आसपास के क्षेत्रों में बड़े स्तर पर बासमती चावल की खेती होती थी। इसके अलावा देहरादून में चाय की पैदावार की जाती थी। लेकिन राज्य बनने के बाद तेजी से शहरीकरण हुआ। खेती की जमीनों पर आवासीय व व्यावसायिक भवनों का निर्माण हो गया, जिससे बासमती चावल की खुशबू भी समाप्त हो गई। प्रेमनगर के समीप चाय बागान भी झाड़ियों में तब्दील हो गए। राज्य बनने से पहले उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में मोटे अनाज के रूप में मंडुवा, झंगोरा बड़े पैमाने पर होता था। लेकिन इसका इस्तेमाल लोग अपने ही करते थे। 25 साल में फिर से राज्य के मोटे अनाजों को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में पहचान मिली है। मंडुवा व झंगोरा के व्यंजन आज फाइव स्टार होटल में परोसे जा रहे हैं। शहरों में बड़े-बड़े मॉल में भी मंडुवा बिक रहा है। मोटे अनाजों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदेश सरकार ने राज्य मिलेट मिशन शुरू किया है। मंडुवे को जीआई टैग प्रमाणीकरण किया गया। उत्तराखण्ड के जैविक उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। प्रदेश में 4.50 लाख से अधिक किसान जैविक खेती कर रहे हैं। 2.50 लाख हेक्टेयर पर किसान जैविक खेती कर रहे हैं। प्रदेश सरकार हाउस आफ हिमालयाज ब्रांड के माध्यम से जैविक उत्पादों को मार्केटिंग को बढ़ावा दे रही है। उत्तराखण्ड जैविक उत्पाद परिषद के माध्यम से भी राज्य के जैविक उत्पादों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मार्केटिंग व ब्रांडिंग की जा रही है। उत्तराखण्ड के हर्षिल, मुनस्यारी, जोशीमठ व चकराता की राजमा स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। वहीं, उत्तरकाशी का लाल चावल की अपनी पहचान है। प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में गहत, काला भट्ट, तुअर दाल का उत्पादन होता है। विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले चमोली और अल्मोड़ा जिलों में कृषि के समक्ष अनेक चुनौतियां मुंहबाए खड़ी हैं। अल्मोड़ा जिला पलायन की मार से सर्वाधिक प्रभावित है तो चमोली के तमाम गाँवों को मौसम की मार से जूझना पड़ता है। इस सबका असर खेती-किसानी पर पड़ा है। खेती में कम उत्पादकता, आजीविका के अपेक्षाकृत कम संसाधनों के चलते क्रय शक्ति में कमी, सिंचाई व्यवस्था का अभाव, कौशल विकास व उद्यमिता को प्रभावी उपाय न होने समेत अन्य कारणों से यह दोनों जिले अन्य जिलों की अपेक्षा पिछड़े हैं।

इस बीच केन्द्रीय कैबिनेट ने कृषि की दृष्टि से देशभर में 100 आकांक्षी जिलों के प्रस्ताव को हरी झण्डी दी। इसमें अल्मोड़ा व चमोली को भी शामिल किया गया है। दोनों जिलों को प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना के तहत सरसब्ज बनाया जाएगा। इसके लिए छह साल की अवधि तय की गई है। विभिन्न विभागों की योजनाओं के क्रियान्वयन के दृष्टिगत केन्द्र ने नोडल अधिकारी भी नामित कर दिए हैं। केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय में संयुक्त सचिव को अल्मोड़ा और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय में संयुक्त सचिव को चमोली का नोडल अधिकारी नामित किया है। इन जिलों में प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना के तहत किए जाने वाले कार्यों की निगरानी नीति आयोग करेगा। पहाड़ों में स्थानीय संसाधनों को ध्यान में रखकर कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। स्थानीय रोजगार मिलने से पलायन में कुछ कमी आयेगी व कुछ लो जो पलायन कर चुके हैं उनके भी वापस आने की संभावना बन सकती है। स्कूली शिक्षा में कौशल विकास की शिक्षा जैसे इलेक्ट्रैशियन, कारपेंटर, राज मिस्त्री, स्कूटर मोटर साइकिल मैकेनिक आदि क्षेत्र में दी जानी चाहिए जो कि पहाड़ों पर जरूरत है। सूचना क्रान्ति के युग में भी पहाड़ों पर टेलीफोन व व इंटरनेट की समुचित सुविधा नहीं है जो सुविधा है उसकी गुणवत्ता में सुधार की जरूरत है। कृषि इनपुट (आदानों) का सचल वाहनों के माध्यम से सीजन के शुरू में सम्पूर्ण पहाड़ी क्षेत्रें में उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। साथ में पैदावार का किसानों को उचित मूल्य मिले। यह सुनिश्चत किया जाना चाहिए। उत्तराखण्ड सरकार को हल्दी, अदरक, मिर्च आदि का समर्थन मूल्य सुनिश्चित कर इनकी समय पर खरीददारी की जानी चाहिए व सभी सरकारी विभागों में इनकी आपूर्ति की जानी चाहिए। यदि हो सके तो आर्गेनिक ब्रांडिंग पर मिशन मोड में कार्य शुरू किया जाना चाहिए। वन पंचायतों का यदि समुचित प्रबन्ध किया जाये तो यह भी आय के अच्छे साधन हो सकते हैं और जो पत्ते आग से जलते हैं उनसे आर्गेनिक खाद बनाई जा सकती है या अन्य उपयोगी चीजें भी बनाई जा सकती हैं। बेमौसमी फल व सब्जी से अत्यधिक आय हो सकती है बशर्ते प्रयास दिखावा मात्र न हो और समूह चाहे गाँवों का हो या विकासखण्डों का हो एक फसल का चयन कर उत्पादन कराया जाये ताकि विपणन हेतु समुचित मात्रा हो। एक ब्लाक एक फसल जैसी योजना बनाकर किसानों को प्रोत्साहित किया जाये किसानों की हैंड होल्डिंग करके योजनाओं को धरातल पर उतारना होगा। प्रवासी उत्तराखण्डियों को कम से कम एक दो माह उत्तराखण्ड में रहना चाहिए। मुख्यतया जो स्वस्थ सेवानिवृत लोग हैं ताकि उनके आगमन से क्षेत्र के लोगों को उनकी खरीदारी से कुछ आर्थिक सहायता मिलेगी साथ ही साथ उनके ज्ञान से बौद्धिक विकास में भी मदद मिलेगी।

पहाड़ों में स्थानीय संसाधनों को ध्यान में रखकर कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। स्थानीय रोजगार मिलने से पलायन में कुछ कमी आयेगी व कुछ लो जो पलायन कर चुके हैं उनके भी वापस आने की सम्भावना बन सकती है। स्कूली शिक्षा में कौशल विकास की शिक्षा जैसे इलेक्ट्रैशियन, कारपेंटर, राज मिस्त्री, स्कूटर मोटर साइकिल मैकेनिक आदि क्षेत्र में दी जानी चाहिए जो कि पहाड़ों पर जरूरत है। सूचना क्रान्ति के युग में भी पहाड़ों पर टेलीफोन व इंटरनेट की समुचित सुविधा नहीं है जो सुविधा है उसकी गुणवत्ता में सुधार की जरूरत है। कृषि इनपुट (आदानों) का सचल वाहनों के माध्यम से सीजन के शुरू में सम्पूर्ण पहाड़ी क्षेत्रों में उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। साथ में पैदावार का किसानों को उचित मूल्य मिले। यह सुनिश्चत किया जाना चाहिए। बेमौसमी फल व सब्जी से अत्यधिक आय हो सकती है बशर्ते प्रयास दिखावा मात्र न हो और समूह चाहे गाँवों का हो या विकासखंडों का हो एक फसल का चयन कर उत्पादन कराया जाये ताकि विपणन हेतु समुचित मात्रा हो। एक ब्लाक एक फसल जैसी योजना बनाकर किसानों को प्रोत्साहित किया जाये किसानों की हैंड होल्डिंग करके योजनाओं को धरातल पर उतारना होगा। प्रवासी उत्तराखण्डियों को कम से कम एक दो माह उत्तराखण्ड में रहना चाहिए। मुख्यतया जो स्वस्थ सेवानिवृत लोग हैं ताकि उनके आगमन से क्षेत्र के लोगों को उनकी खरीदारी से कुछ आर्थिक सहायता मिलेगी साथ ही साथ उनके ज्ञान से बौद्धिक विकास में भी मदद मिलेगी। मेरा मानना है ऐसा करके कह पायेंगे कि चलो देर है पर अन्धेर नहीं।

ज्योतिष की बातें- 255

23 नवम्बर 2025 को बुध वक्री गति से चलते हुए वापस अपनी मित्रराशि तुला में प्रवेश करेगा। जहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि या युति भी नहीं होगी अत: बुध अत्यन्त बली रहेगा। मन्त्रेश्वर कृत फलदीपिका के अनुसार बुध दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ फल देता है। अत: अगले 13 दिन बुध बुद्धि, स्मरण शक्ति, वाणिज्य एवं व्यवसाय, साहित्य, लेखन सामग्री, गणित, वाणी, संचार माध्यम आदि अपने कारक विषयों में कन्या कर्क, वृषभ, मीन, मकर व धनु राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा ।

इस स्थाई स्तम्भ में ग्रह विशेष के गोचरफल का वर्णन किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य ग्रह भी अपना फल प्रदान करते रहते हैं। यह गोचरफल स्थूल रूप से ही सही होता है। व्यक्ति विशेष के लिए फलित का सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली, दशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 145

विवाह संस्कार पर संकट

एक समाचार के अनुसार पुणे जिले में 1 लाख 9 हजार महिलाएं अकेली हैं। सरकार इन सभी को हर प्रकार की सुविधाएं प्रदान करने की योजना बना रही है। सरकार की इन प्रोत्साहन नीतियों और नारी सशक्तिकरण अभियान आदि के कारण ही देश में लगभग एक तिहाय महिलाओं ने विवाह नहीं किया है अथवा विवाह करके पति को छोड़ दिया है। रोजगार पाने के बाद लड़का सोचता है कि अब मैं विवाह कर लूँ लेकिन लड़की रोजगार पाने के बाद सोचती है कि अब विवाह की आवश्यकता ही क्या है, अपने पैरों पर तो खड़े हो ही गए। एक तिहाई लड़कियों के विवाह न करने के कारण उतने ही एक तिहाई लड़के कुंवारे रह जाने को बाध्य हैं क्योंकि किसी भी योनि में नर और मादा की संख्या बराबर ही रहती है।

लड़कियाँ तो प्राय: लिव इन रिलेशन में रह लेती हैं लेकिन सभी लड़कों को यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हो पाता है। सरकार ने भी लिव इन रिलेशन का लाइसेंस देना अब प्रारम्भ कर दिया है। इस कारण अब विवाह संस्कार और परिवार व्यवस्था नष्ट होने की कगार पर है। इस बात का सर्वाधिक कष्ट महिलाओं को ही होता है, यह उन माताओं से पूछिए जिन्हें बेटे के लिए बहू नहीं मिल रही है और बेटी विवाह करना नहीं चाहती। सरकार को चाहिए कि विवाह योग्य उन्हीं स्त्रियों को नौकरी आदि सुविधाएं दी जाएं जिनका विवाह हो चुका हो। समाज के लिए यह बहुत ही गम्भीर विषय है ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन की खुशी

आदि कैलास क्षेत्र में सात सौ धावकों ने लगाई दौड़

हीरा गुंज्याल व सरिता गुंज्याल के खेल ने भी रोमांचित किया

जीवन सिंह दुग्ताल

धारचूला। राज्य स्थापना की रजत जयन्ती पर पहली हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन की खुशी अभी तक दिखाई दे रही है। आदि कैलास क्षेत्र में 14000 फुट की ऊँचाई पर सात सौ धावकों ने जिस प्रकार से दौड़ लगाई वह साहसिक खेलों का द्वार खोलने में सहायक है। इस पूरे आयोजन में 51 वर्षीय श्रीमती हीरा गुंज्याल और 41 वर्षीय सरिता गुंज्याल ने अपना स्थान बनाते हुए रोमांचित किया।

उत्तराखण्ड के पौराणिक और आध्यात्मिक स्थल आदि कैलास क्षेत्र में राज्य की प्रथम हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन का यह आयोजन था। सचिव पर्यटन धीराज गर्ब्याल इस पूरे आयोजन के लिये पहले से ही तैयारी के निर्देश दे चुके थे। आयोजन को लेकर क्षेत्रवासियों में बेहद उत्साह था क्योंकि साहसिक खेलों की यह शुरुआत भविष्य में नये रास्ते बना सकता है और देश-दुनिया के साहसिक खिलाड़ी इस ओर आएंगे।

यहाँ हुई हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन में देश के 22 राज्यों के 700 से अधिक धावकों ने 60 किलोमीटर की दौड़ लगाई। यह मैराथन 14000 फिट की ऊँचाई पर स्थित आदि कैलास क्षेत्र में ज्योलिंगकांग से आरम्भ हुई। 60 किमी की हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन वर्ग में पौड़ी गढ़वाल की मीनाक्षी और पुरुष वर्ग में चमोली के दिगम्बर सिंह ने बाजी मारी। यह दौड़ आदि कैलास से होकर कालापानी और कालापानी से होते हुए गुंजी आकर समाप्त हुई। मैराथन का शुभारम्भ केन्द्रीय सड़क परिवहन राज्यमंत्री अजय टम्टा ने अन्य अतिथियों के साथ मिलकर किया।

उच्च हिमालय क्षेत्र में हुई मैराथन दूरी के हिसाब से अलग-अलग वर्गों में हुई। 60 किमी मैराथन में 22 राज्यों के 163 एथलीट ने भाग लिया। 42 किमी मैराथन में 85 एथलीट और 21 किमी हाफ मैराथन में 190 एथलीट ने भागीदारी की। इसके अलावा 207 एथलीट 10 किमी मैराथन में शामिल हुए। इससे पूर्व मेडिकल जांच में 20 एथलीट हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा मैराथन के लिए अनफिट पाए गए। उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस पर यह आयोजन प्रदेश की साहसिक क्षमता, प्राकृतिक धरोहर और पर्यटन सम्भावनाओं के रूप में देखा जा रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रामसिंह धौनी की पुण्यतिथि समारोह

अल्मोड़ा। प्रख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राम सिंह धौनी की 95वीं पुण्यतिथि पर जिला पंचायत परिसर में समारोह का आयोजन किया गया। सालम समिति की ओर से अध्यक्ष राजेन्द्र रावत, विनोद जोशी, गोविन्द लाल वर्मा, गोपाल सिंह मेहरा, लोकमणी भट्ट, विविन चन्द्र जोशी आदि उपस्थित थे। समिति ने राम सिंह की स्मृति में बहुउद्देशीय पुस्तकालय और वाचनालय नगर निगम से सुचारू रूप से संचालित न करने पर नाराजी भी जताई।

आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण आयोजित

उत्तरकाशी। डीएम प्रशान्त आर्य के निर्देशों के अनुपालन में जिले की न्याय पंचायतों में आपदा सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। जनपद में कुल 36 न्याय पंचायतों में यह आयोजन होने हैं। इसके तहत न्याय पंचायत पीपली और वाडिया में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

कृष्ण कुमार गुप्ता का निधन

हल्द्वानी। कुमायूँ टाइम्स के सम्पादक 88 वर्षीय कृष्ण कुमार गुप्ता का विगत दिवस हृदयगति रुकने से निधन हो गया। उनके निधन पर पत्रकारों ने शोक प्रकट कर उनका स्मरण किया। मृदुल स्वभाव के गुप्ता जी को पिघलता हिमालय परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

रानीखेत जिला बनाए जाने की मांग को लेकर गरजे, सीएम को ज्ञापन

रानीखेत। उत्तराखण्ड राज्य गठन के 25 वर्ष बीत जाने के बाद भी घोषित नए जिलों के अस्तित्व में न आने की नाराजगी देखी जा रही है। रानीखेत जिला बनाए जाने की मांग को लेकर फिर से गरजना हुई है और मुख्यमंत्री को इसके लिये ज्ञापन प्रेषित किया गया।

रानीखेत जिला बनाने की मांग कर रहे आन्दोलनकारियों ने कहा कि 2011 में भाजपा सरकार की ओर से घोषित चार नए जिलों में रानीखेत भी शामिल था लेकिन गजट अधिसूचना जारी न होने से मामला अधर में लटक गया। रानीखेत विकास समिति के बैनर तले विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े लोगों ने संयुक्त मजिस्ट्रेट कार्यालय में एकत्रित होकर अपनी बात रखी और तहसीदार दीपिका आर्या के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा गया जिसमें रानीखेत को शीघ्र जिला घोषित करने की मांग की गई। समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि रानीखेत को जिला बनाने की नितान्त आवश्यकता है। जिला न होने से नगर का व्यावसायिक ढांचा बुरी तरह प्रभावित हुआ है और पलायन बढ़ रहा है।

वक्ताओं ने कहा कि 2011 में तत्कालीन मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने रानीखेत सहित चार नए जिलों की घोषणा की थी लेकिन उस पर अमल नहीं हुआ। इसके बाद कांग्रेस सरकार ने भी कमेटी बनाकर मामला ठण्डे बस्ते में डाल दिया। इसके बाद दो कार्यकाल से भाजपा सत्ता में है लेकिन घोषित जिलों पर कोई निर्णय नहीं ले पा रही है। ज्ञापन देने वाले शिष्टमण्डल मं डी.एन.बडोला, प्रमोद पाण्डे, अगस्त लाल साह, मोहन नेगी, भुवन पपनै, गिरीश भगत, खजान पाण्डे, कुलदीप कुमार सहित कई लोग उपस्थित थे।

धौलादेवी में निर्माण कार्यों की प्रगति के लिये प्राकृतिक जलस्रोतों पर प्रहार

अल्मोड़ा। धौलादेवी ब्लाक के पोखरी गाँव के लोगों की वर्षों से प्यास बुझाने वाले प्राकृतिक नौले और धारे निर्माण कार्य के लिये प्रहार से घायल हुए हैं। ऐसे में घर में स्थापित पेयजल लाइनों में भी नियमित रूप से पानी नहीं आने से गाँव की 850 की आबादी पेयजल से जूझने को मजबूर है। ठण्ड के इन दिनों में ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

धौलादेवी में लोक निर्माण विभाग की ओरसे लगभग एक वर्ष्ज पूर्व चौसला चिल सड़क का निर्माण हुआ। सड़क निर्माण कार्य के दौरान सड़क का मलबा आने से पोखरी प्राइमरी पाठशाला के पास एक नौला औरएक धारा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। सड़क का विधिवत शुभारम्भ विगत माह हो गया था लेकिन नौलों से अब तक मलबा नहीं हटाया जा सका है। ग्रामीणों के अनुसार पूर्व में भी दो नौले और एक धारा सड़क निर्माण कार्य की भेंट चढ़ चुका है। नौले लम्बे समय से मलबे में दबे हैं और ग्रामीणों की शिकायत केबावजूद सम्बन्धित विभाग इन प्राकृतिक जलस्रोतों की सुध नहीं ले रहा है। यहाँ लोगों के घरों तक पेयजल लाइन पहुँची है लेकिन उनमें सप्ताह में एक-दो बार ही पानी आ पाता है। इन हालातों में ग्रामीणों का रोष बढ़ने लगा है।

भतरौंजखान के खीला गाँव में भी विगत कई दिनों से पेजयल आपूर्ति ठप्प होने से हाहाकार मचा है। पानी के लिये हैण्डपम्प का सहारा लिया गया है। 15 साल पहले बने कोसी पम्पिंग पेयजल योजना से खानी गाँव को पेयजल आपूर्ति होती है, जो फिलहाल बाधित है।

अनसुया की रथ डोली यात्रा, ध्याणी मिलन

जोशीमठ। क्षेत्र में माता अनसूया की रथ डोली यात्रा ने गाँवों का भ्रमण कर ध्याणी मिलन एवं देव भेंट कार्यक्रम में आशीर्वाद दिया। सुनील गांव, पंचवटी सिंहधार, रविग्राम, ढाक, बड़ागांव जगह जगह डोली का स्वागत किया गया।

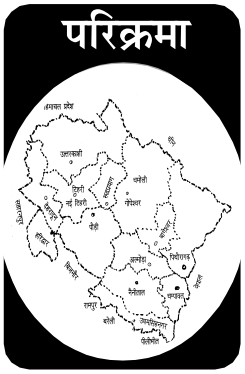

विकास यात्रा जारी है : पुष्कर धामी

देहरादून। उत्तराखण्ड राज्य की रजत जयन्ती पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि राज्य की विकास यात्रा उपलब्धियों से भरा अध्याय है। कहा कि पिछले 25 वर्षों में प्रदेश ने अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचे, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्रों में ऐतिहासिक प्रगति की है। इस अवधि में अर्थव्यवस्था का आकार 26 गुना अधिक बढ़ा है।

जिस सपने को लेकर लड़ी लड़ाई, वह नहीं हो पाया पूरा

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तर प्रदेश से अलग होकर उत्तरांचल राज्य बना था, जिसका नाम 2007 में बदलकर उत्तराखण्ड रखा गया। इस साल राज्य को 25 साल हो चुके हैं। ऐसे में पिछले 25 सालों में उत्तराखण्ड में बहुत बदलाव आए हैं। कई लोगों का मानना है कि मैदानी जिलों में शहरीकरण और विकास हुआ तो कई लोग मानते हैं कि पहाड़ों पर आज तक बदहाल स्थिति बनी हुई है। देहरादून के रहने वाले एक एडवोकेट ने कहा कि राज्य बन गया, लेकिन बेहतर होता कि यह यूपी से अलग न होता, क्योंकि जिस तरह से देहरादून समेत अभी राज्यों में गुण्डागर्दी, क्राइम देखने के लिए मिलता है तो अलग से राज्य बनाने का क्या फायदा। जब यहाँ के स्कूलों और अस्पतालों की स्थिति न बदली हो। उन्होंने बताया कि हम बचपन से देहरादून में रह रहे हैं कभी शान्तप्रिय शहर हुआ करता था, लेकिन आज चोरी- चकारी और खराब माहौल है। यातायात जाम इतना हो जाता है कि गाड़ी वालों की तो छोड़िए पैदल चलने वाले को जगह नहीं मिल पाती है।

वाकेई पहाड़ का जंगल, जमीन, जवानी और पानी राज्य के विकास के लिए काम आ रही हैं बल्कि जंगलों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है, भूमि खनन से खोदी जा रही है और पहाड़ की जवानी यानी युवा अक्सर बेरोजगारी या भ्रष्टाचार को लेकर सड़कों पर उतर आते हैं। जिस आशा को लेकर सभी ने राज्य गठन की लड़ाई लड़ी थी वह पूरी न हो सकी है। कुछ लोगों का यह मानना है कि राज्य बनने के बाद कई लोगों ने उद्यम और अच्छी नौकरी पाकर आजीविका चला रहें हैं। पवन सिंह रावत का कहना है कि उन्होंने सरकारी लोन लेकर अपना स्माल बिजनेस शुरू किया था, कई सरकारी योजनाओं से शहर के हालात सँवारे हैं और उद्यम को भी नई उड़ान मिली है।

कई लोग देहरादून शहर के बदले स्वरूप और सौंदर्यीकरण से खुश है तो कई लोग शहरीकरण और प्रदूषण के चलते देहरादून को पहले से खराब हालत में देख रहें हैं। प्रशान्त का कहना है कि देहरादून को स्मार्ट सिटी बनाने के लिए साल 2019 से काम शुरू किया गया था लेकिन आज तक पूरी तरह से देहरादून स्मार्ट सिटी नहीं बन पाया। यहाँ कूड़े का अम्बार, यातायात जाम का झाम और क्राइम से लेकर खराब आबोहवा ने शान्त शहर को खराब बना दिया लेकिन जिस उत्तराखण्ड का सपना राज्य आन्दोलनकारियों ने देखा था वह आज तक पूरा नहीं हो पाया है।

उत्तराखण्ड राज्य गठन के पीछे दो सदियों का संघर्ष है। कई राज्य आन्दोलकारियों की शहादत है, जिसके बदौलत आज उत्तराखण्ड अपने अस्तित्व में आया है परन्तु अभी भी सपनों का उत्तराखण्ड अधूरा है। जानिए राज्य स्थापना के पीछे की कहानी। उत्तराखण्ड राज्य ऐसे ही नहीं बना है। इसके पीछे दो सदी की संघर्ष की कहानी है। माताओं-बहनों का अपमान, गोलीकाण्ड, लाठीचार्ज और कई शहादतें इसमें शामिल हैं।

राज्य स्थापना के 25 साल पूरे हो गए हैं लेकिन सपनों का उत्तराखण्ड की तलाश अभी जारी है। दर्द इस बात की है कि प्रदेश में इन 50 सालों के दौरान चौथी निर्वाचित सरकार बन चुकी है, लेकिन राज्य निर्माण आंदोलन कार्यों के सवाल आज भी जस के तस बने हुए हैं। उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के दौरान तमाम घटनाओं में 40 राज्य आन्दोलनकारियों ने अपनी जान गंवाई थी, जिसका रिकॉर्ड सरकारी खातों में दर्ज है। इसमें मुजफ्फरनगर काण्ड, मसूरी और खटीमा काण्ड में सबसे ज्यादा आन्दोलनकारी शहीद हुए थे। शहीद राज्य आन्दोलनकारियों पर गौर करें तो 1 सितम्बर 1994 को खटीमा गोलीकाण्ड हुआ, जिसमें 7 आन्दोलनकारी शहीद हो गए थे। खटीमा में हुए इस गोलीकाण्ड के दौरान राज्य आन्दोलनकारी बेहद शांति के साथ अपना आन्दोलन कर रहे थे तभी अचानक से पुलिस फोर्स की तरफ से गोलियाँ चलाई गई जिसमें 7 आन्दोलनकारियों को अपनी जान गंवानी पड़ी। इतनी शहादतों के बाद आखिरकार 9 नवम्बर 2000 को राज्य की स्थापना हुई। वहीं 25 साल बाद भी शहीदों और राज्य आन्दोलनकारियों के सपनों का उत्तराखण्ड नहीं बन पाया है। हैरत इस बात की है कि आज तक राज्य आन्दोलनकारियों की मांगों को कोई सरकार पूरा नहीं कर पाई है।

राज्य आन्दोलनकारियों का कहना है कि सरकारों ने सत्ता के लालच में शहीदों के सपनों को भुला दिया है। कांग्रेस और भाजपा ने बारी-बारी प्रदेश पर राज तो किया लेकिन दिल्ली की जी हजूरी के चक्कर में प्रदेश के विकास और शहीदों के सपनों को नेता भुला बैठे। देवभूमि या देवताओं का निवास कहे जाने वाले उत्तराखण्ड, भारत के उत्तरी भाग में स्थित है। यह हिमालय पर्वतमालाओं से घिरा एक खूबसूरत राज्य है, जो आध्यात्मिक आभा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से ओतप्रोत है। यह राज्य अपने मनोरम हिल स्टेशनों, खूबसूरत गाँवों, असंख्य नदियों और चार सबसे पवित्र मन्दिरों (यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ), जिन्हें छोटा चार धाम भी कहा जाता है, के लिए प्रसिद्ध है। उत्तराखण्ड को बनाने में आमजन की सीधी सहभागिता रही, इसमें हर वर्ग का संघर्ष रहा परन्तु जब राज्य के बारे में सोचने व सरकारों के कार्यो के आकलन का मौका आया तो सभी सरकार से अपनी-अपनी मांगों को मनवाने में लग गए। ऐसा लग रहा है कि उत्तराखण्ड राज्य का गठन ही कम काम बेहतर पगार, अधिक पदोन्नति और ज्यादा सरकारी छुट्टियों, भर्तियों में अनियमितता व विभिन्न निर्माण कार्यो की गुणवत्ता में समझौता करने के लिए हुआ है। मानो विकास का मतलब विद्यालय व महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, अस्पतालों व मेडिकल कालेजों के ज्यादा से ज्यादा भवन बनाना भर है, न कि उनके बेहतर संचालन की व्यवस्था करना। हर साल सड़कें बनाना मकसद है, पर हर साल ये क्यों उखड़ रही हैं, इसकी चिन्ता न तो सरकारें करती हैं और न ही विपक्ष इस पर सवाल उठाता है। जाहिर है कि करोड़ों रुपये के निर्माण में लाभार्थी पक्ष-विपक्ष दोनों के अपने हैं। उस वर्षगांठ को मनाने का औचित्य ही क्या है जिसमें उपलब्धियों व असफलताओं की बैलेंस सीट ईमानदारी से न खंगाली जाए। अब लोग भी यह पूछने लगे हैं कि अलग राज्य बनने के बाद ऐसा क्या हुआ जो उत्तर प्रदेश में ही रहते तो नहीं हो पाता। अगर कई जमीनी मुद्दों को सत्ताधारी नहीं देखते हैं या छिपाते हैं तो इसके कारण समझ में आते हैं, लेकिन विपक्ष की खानापूर्ति भी चिन्ता का कारण है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हरि प्रदर्शनी अपने लक्ष्य पर आज भी भरपूर

महिला मंगल दलों ने दिखाया हुनर, दिया सन्देश

उद्यमियों का सम्मान हुआ

पि.हि. प्रतिनिधि

मुनस्यारी। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हरिसिंह जंगपांगी की याद में प्रतिवर्ष होने वाली हरि प्रदर्शनी इस बार भी अपनी चाल सम्पन्न हुई। कहना सच है कि हरि प्रदर्शनी अपने लक्ष्य पर आज भी भरपूर है। महिला मंगल दलों ने अपना हुनर दिखाने के अलावा सन्देश दिया और हरि स्मारक समिति द्वारा उद्यमियों को सम्मानित किया गया।

तीन दिवसीय इस प्रदर्शनी का शुभारम्भ शान्तिकुन्ज मुनस्यारी से पधारे अनुयायियों द्वारा दीपयज्ञ से किया गया। सायंकालीन सांस्कृतिक उत्सव की शुरुआत मुख्य अतिथि जगत सिंह टोलिया व विशिष्ट अतिथि हरि स्मारक समिति के पूर्व अध्यक्ष ललित सिंह जंगपांगी द्वारा किया गया। आयोजन के द्वितीय दिवस की शुरुआत झण्डा रोहण के साथ हुई। एक ओर मल्ला जोहार विकास समिति की बैठक दूसरी ओर स्व. प्रहलात सिंह जंगपांगी स्मृति बॉलीबाल प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता में की विजेता सरमोली उपविजेता जैंती की टीम रही।

प्रदर्शनी का आकर्षण झांकियों का प्रदर्शन था। जिसमें तल्लादुम्मर की टीम प्रथम, दराती की द्वितीय, इमला की तृतीय रही। तेजम निवासी भरत रावत ने अपने नाना-नानी की स्मृति में झांकियों को नगद पुरस्कार प्रदान किया। इसी प्रकार ढुस्का प्रदर्शन में महिला मंगल दलों की टीमों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। लक्ष्मण सिंह पांगती लछबू के संचालन में मंचीय सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देखने को मिलीं। बच्चों की निबन्ध, क्विज प्रतियोगिता सहित रस्साकसी खेल का मनोरंजन हुआ। प्रदर्शनी समारोह का शुभारम्भ तारा पांगती व हीरा लाल सिंह पांगती द्वारा किया गया। हरि स्मारक समिति द्वारा उद्यमी कुलदीप सिंह हिन्दू बारबर मुनस्यारी व महेन्द्र राम नई बस्ती, हिन्दू बूचड़ रमेश राम जैंती, कृषि बागवानी क्षेत्र में चन्द्र सिंह हरकोटिया आलू राजमा काश्तकार, स्वयं सहायता समह में अम्बर स्वयं सहायता समूह नानासेम (चम्पा पांगती), जय छुरमल देवता सहायता समूह नानासेम (चम्पा पांगती), जै माँ भगवती स्वयं सहायता समूह मल्ला दुम्मर(यमुना ल्वांल), जय पुर्ब्याल स्वयं सहायता समूह तल्ला दुम्मर (कमला बृजवाल), जोहार घाटी समूह मुनस्यारी (तारा पांगती), तरुण जंगपांगी इमला, राम सिंह जंगपांगी थल को सम्मानित किया गया।

आयोजन में गोविन्द सिंह जंगपांगी, प्रहलाद सिंह जंगपांगी, प्रेम सिंह जंगपांगी, गंगा सिंह जंगपांगी, अध्यक्ष किशन सिंह जंगपांगी, नाथू सिंह जंगपांगी, केदारसिंह जंगपांगी, लोकबहादुर सिंह जंगपांगी, श्रीराम सिंह धर्मशक्तू, हयात सिंह कार्की, हीरा सिंह कार्की, गोकर्ण सिंह मर्तोलिया, शंकर सिंह धर्मशक्तू, भूपेन्द्र सिंह जंगपांगी, मंगल सिंह जंगपांगी, गणेश प्रताप सिंह ल्वांल, जगदीश वृजवाल, धाम सिंह, आनन्द सिंह रिलकोटिया, प्रतिमन सिंह वृजवाल, प्रहलाद सिंह बरफाल, गणेश सिंह जंगपांगी, पी.एस.बरफाल, नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, श्रीमती तारा पांगती, चन्द्र सिंह वृजवाल, कुन्दन सिंह पांगती, देव सिंह बोरा एडवोकेट, गणेश सिंह बरफाल, भगवान सिंह बरफाल, प्रहलाद सिंह बरफाल, देवेन्द्र सिंह, प्रधान पंकज सिंह वृजवाल, सहित तमाम लोग उपस्थित थे।

महाभारत : हमारी...

प्रथम पृष्ठ का शेष

और उन्हें शान्ति मिली।

शायद इसी में इस बात का अर्थ छिपा है कि क्यों वेदव्यास ने एक शुद्ध महाकाव्य को धर्मशास्त्र और इतिहासग्रन्थ में बदल दिया। और महाभारत को वैसा बनाकर अद्‌भुत कवि वेदव्यास ने जिस नई काव्यशैली का प्रवर्तन दिया वह इतनी मान्य और लोकप्रिय हो गई कि आगे चलकर सारी पुराण परम्परा ने उस शैली का अनुकरण किया। इतिहास शैली को व्यास ने इस तरह पूरे महाभारत में पिरोया कि जहाँ भी उन्हें बातचीत और घटनाक्रम के दौरान सम्भव नजर आया, उन्होंने वहाँ प्राचीन इतिहास को अपने से तीन हजार साल पहले हुए मनु के परवर्ती ज्ञात इतिहास को और मनु से पहले के माइथोलोजी बन चुके इतिहास को पिरो दिया, गूँथ दिया। महाभारत को अर्थशास्त्र बनाने का काम वेदव्यास ने इस प्रकार किया कि भारतीय जीवन के मूल्यों को, जीवनशैली को, यहाँ की विचारधाराओं को उन्होंने अवसर मिलते ही महाभारत में यहाँ-वहाँ लिख दिया। नतीजा यह हुआ कि जहाँ महाभारत में रामोपाख्यान, नलोपाख्यान, शकुन्तलो पाख्यान जैसी कथाएँ उनके इतिहासचरित्र को निखारती हैं तो वहाँ शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व जैसे जैसे अंशों में इस प्रबन्धकाव्य का धर्मशास्त्र चरित्र उभर कर सामने आ गया है। गीता में तो उस समय की तमाम दार्शनिक विचारधाराओं का अद्‌भुत समावेश कर दिया गया है। इस तरह महाभारत में इतना कुछ समाविष्ट कर दिया गया है कि एक कहावत चल पड़ी कि महाभारत में जो लिखा गया है वही बाकी जगहों पर भी लिखा है और अगर कोई वर्णन महाभारत में नहीं है तो वह अन्यत्र भी कहीं नहीं मिल पाएगा- यदिहस्ति तदन्यत्र यन्नेहस्ति न तत् क्वचित।

इतने विशालकाय और विराट महाग्रन्थ को देखकर पश्चिमी विद्वानों की बुद्धि ऐसी चकराई कि वे मान ही नहीं पा रहे थे कि इतनी बड़ी किताब किसी एक व्यक्ति की रचना हो सकती है। इसलिए वे महाभारत के विकास को विभिन्न अवस्थाओं की कल्पना में खो गए। जाहिर है कि इतना बड़ा ग्रन्थ किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं हो सकता। वेदव्यास ने जो महाभारत लिखा उसका शरीर बढ़ाने में उन्हें अपने कई साथियों से मदद मिली। वेदव्यास की इस टीम में उनके ही एक शिष्य वैशम्मायन थे। वेदव्यास के पुत्र शुकदेव भी इस टीम में अद्‌भुत और महत्वपूर्ण सदस्य थे। जिस संजय ने धृतराष्ट्र को महाभारत का पूरा वृत्तान्त सुनाया था वे भी वेदव्यास की महाभारत टीम में एक अंग थे। इन सबने मिलकर महाभारत लिखा और उसमें अपने अपने हिसाब से, कुछ वेदव्यास के निर्देश से तो कुछ अपने हिसाब से उसमें जोड़ा और उनका कलेवर एक लाख श्लोकों से भी ज्यादा तक पहुँचाया। महाभारत में आगे चलकर प्रक्षेप अंश नहीं जोड़े गए, ऐसा हमारा कोई प्रस्ताव नहीं है। पर महाभारत मुख्य रूप से और लगभग पूर्ण रूप के वेदव्यास और उनकी टीम ने लिखा, इसमें भी कोई दो राय नहीं।

(साभार नवभारत टाइम्स)

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न. 8958525979, 9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मंजू पांगती की पुस्तक 'पहाड़ों की धड़कन' का विमोचन

हल्द्वानी। जोहार महोत्सव में मंजू पांगती की नई पुस्तक 'पहाड़ों की धड़कन' का विमोचन हुआ। कविता संग्रह में लेखिका ने जिस तरह से क्रमवार रचनाओं को पिरोया है वह उनकी प्रतिभा का दर्शन कराती हैं। इससे पहले श्रीमती पांगती की पुस्तक 'अरमानों का मेला' काफी चर्चित रही है। नियमित रूप से लेखन में जुटी लेखिका पिघलता हिमालय के संस्थापक स्व.दुर्गासिंह मर्तोलिया की सुपुत्री हैं।

जोहार शौका केन्द्रीय समिति द्वारा मिनी म्यूजियम का प्रदर्शन

हल्द्वानी। जोहार महोत्सव मिनी म्यूजियम का आकर्षण देखने को मिला। जोहार शौका केन्द्रीय समिति द्वारा इसमें हस्तशिल्पियों की कला सहित लेखकों की पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया था। आयोजनों में इस प्रकार के प्रयोग निश्चित रूप से आकर्षण होते हैं। समिति के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह जंगपांगी सहित पूरी टीम ने इस कई दिनों से इसके लिये विचार किया था। साथ ही अध्ययनरत युवाओं को इससे जोड़ा है और नियमित रूप से समिति गतिविधियां करती है।

जोहार दर्पण बेहतर स्मारिका

हल्द्वानी। महोत्सव के अवसर पर 'जोहार दर्पण' नाम से प्रकाशित स्मारिका बेहतर रूप में दिखाई दी है। दरअसल इसके सम्पादन का दायित्व निभा रहे हरीश धर्मशक्तू ने काफी सूझ के साथ इसे आकार दिया है। जेएसडब्लूएस की पत्रिका के लिये उन्होंने अपने सम्पादकीय में ही लिखा है कि संस्कृति, भाषा और परम्परा से जुड़े लेख हमें हमारी पहचान की गहराई से रूबरू कराते हैं।

युवा पुरातन छात्र संगठन का स्टाल

हल्द्वानी। महोत्सव में लगे तमाम स्टालों में से युवा पुरातन छात्र संगठन जीआईसी मुनस्यारी का स्टाल खास आकर्षण था क्योंकि इसका लक्ष्य भेंटघाट से था। डाक्टर दिनेश मर्तोलिया 'गुड्डू', धीरेन्द्र सिंह वृजवाल 'धीरु' सरीखे जुझारू इसमें शामिल हैं। स्टाल में अपने साथियों, अपने पुराने समय, अपने गुरुजनों, अपने समय के खेल सहित फसक-फराल का जोर था।

नृत्यगीत का जोर और विचार-विमर्श का मौका

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी द्वारा इस बार भी जोहार महोत्सव को जिस तैयारी के साथ मनाया गया उसमें तीन दिन तक नृत्यगीत का जोर दिखाई दिया। मंच पर नन्हें कलाकारों सहित नवोदित व स्थापित कलाकार श्रेणी दिखाई दी। अपने चलन में साफगोई दिख रहे कलाकार मंच पर वर्तमान चाल प्रस्तुतियों में लीन थे और उनके संगतकर्ता वाद्ययन्त्रों व समूह नृत्य में साथ दे रहे थे। इसके अलावा पारम्परिक वस्त्राभूषण सहित ढुस्के की चाल पर थिरकते लोगों ने मन मोहा। बच्चों व युवाओं के लिये निर्धारित प्रतियोगिताओं का कुशल संचालन हुआ। मंचीय प्रस्तुतियों के अलावा यह अवसर विचार-विमर्श का भी था इसलिये लगे हाथ अपनों का उत्साह बढ़ाने के लिये आने वालों ने आयोजन के फैलाव को सराहा। सबसे खास बात यह थी कि सोसाइटी के अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह पांगती व सचिव धीरेन्द्र सिंह पांगती जिस तल्लीनता के साथ मंच व उससे दूर व्यवस्था बनाने में जुटे थे वह सराहनीय है। संचालन का दायित्व सांस्कृतिक सचिव व संयोजक नवीन टोलिया व सह संयोजक कैलाश सिंह धर्मशक्तू एकदम सधे हुए अंदाज में निभा रहे थे। समिति के संरक्षक गजेन्द्र सिंह पांगती, देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू, उपाध्यक्ष पुरमल सिंह मर्तोलिया, पुष्पा धर्मशक्तू, कोषाध्यक्ष भूपेश पांगती, भरत सिंह रावत, प्रेम सिंह बुर्फाल, खड़क सिंह रावत, ध्रुव सिंह मर्तोलिया, डॉ. प्रहलाद सिंह मर्तोलिया, धाम सिंह मर्तोलिया, केदार वृजवाल, श्रीमती पदवन्ती धर्मशक्तू, प्रेम सिंह वृजवाल, सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया, ईश्वर सिंह पांगती, भूपाल मर्तोलिया, सुरेन्द्र सिंह धर्मशक्तू, देवेन्द्र सिंह ल्वांल तमाम लोग कार्य सफलता के लिये जुटे रहे। तीन दिवसीय जोहार महोत्सव में इस बार स्टालों में खानपान की सुगन्ध के अलावा हस्तकला, ऊनी वस्त्र सहित विभिन्न सामग्रियां दिखाई दी। मेले में जीतेन्द्र सिंह रावत, गोकर्ण सिंह पांगती, मोहन सिंह लस्पाल, प्रकाश वृजवाल, गंगासिंह धर्मशक्तू, तेज सिंह मर्तोलिया लब्बू मड़वाल, भूपेन्द्र सिंह वृजवाल 'निर्वाध', मनोज सुमित्याल, धाम सिंह, सुमित मर्तोलिया आदि थे।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड 25

“ माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है । हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरुप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिये विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं । ”

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

राज्य स्थापना दिवस
९ नवम्बर
की
हार्दिक शुभकामनाएँ

“ 21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं । पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास । आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है । ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा। ”

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

संकल्प
नये उत्तराखण्ड का

- समान नागरिक संहिता लागू करने वाला देश में प्रथम राज्य बना उत्तराखण्ड।
- राज्य में सशक्त भू कानून, सख्त धर्मान्तरण विरोधी कानून, सख्त नकल विरोधी कानून, एवं दंगारोधी कानून हुआ लागू।
- राज्य में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में ₹3.56 लाख करोड़ के एम.ओ.यू. हुए साईन। अब तक ₹01 लाख करोड़ से अधिक के निवेश की हो चुकी ग्राउंडिंग।
- राज्य के इतिहास में पहली बार पेश हुआ 1 लाख करोड़ से ज्यादा का बजट।
- शहीद सैनिकों के आश्रितों को मिलने वाली अनुग्रह राशि को 10 लाख से बढ़ाकर किया 50 लाख रुपए। परमवीर चक्र विजेताओं की अनुग्रह राशि 50 लाख से बढ़ाकर की गई ढेढ़ करोड़।
- राज्य की अर्थव्यवस्था का आकार 26 गुना बढ़ा है। प्रति व्यक्ति आय 17 गुना बढ़ी है। राज्य गठन के समय वर्ष 2000 में अर्थव्यवस्था का आकार ₹14501 करोड़ था, जो 2024-25 में बढ़कर ₹378240 करोड़ रुपये होने का अनुमान है।
- केदारनाथ पुनर्निर्माण और बदरीनाथ धाम में मास्टर प्लान के तहत कार्य गतिमान। बद्रीनाथ धाम को स्मार्ट आध्यात्मिक पहाड़ी कस्बे के रूप में विकसित करने हेतु ₹255.00 करोड़ की विकास योजनाओं का कार्य गतिमान।
- कुमाऊं क्षेत्र में मानसखण्ड मंदिर माला मिशन के अन्तर्गत 48 मन्दिरों को सर्किट के रूप में जोड़ने का कार्य गतिमान।
- दिल्ली - देहरादून के बीच एलिवेटेड रोड के बनने से 2 से 2.5 घंटे में सफर होगा पूरा।
- राज्य में ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन का कार्य तेज गति से गतिमान। अब तक 70 प्रतिशत कार्य हुआ पूर्ण।
- राज्य में स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिये ₹200 करोड के वेंचर फण्ड की स्थापना।
- वृद्धावस्था पेंशन को बढ़ाकर ₹1500 किया गया है। अब दोनों बुजुर्ग दंपति को मिल रहा वृद्धावस्था पेंशन का लाभ। वृद्धावस्था, विधवा, तथा दिव्यांग पेंशन का भुगतान 3 माह की जगह अब प्रत्येक माह होगा।
- बाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के अन्तर्गत सीमांत के 51 गांवों का चयन कर किया जा रहा सुनियोजित विकास।
- मुख्यमंत्री अंत्योदय निःशुल्क गैस रिफिल योजना के तहत राज्य के करीब पौने दो लाख गरीब परिवारों को साल में 3 सिलेंडर मुफ्त रिफिल।

विकसित भारत सशक्त उत्तराखण्ड

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)